रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय
मातुलुङ्गध
राय
चूतकलि
काभृते
कुठारवते

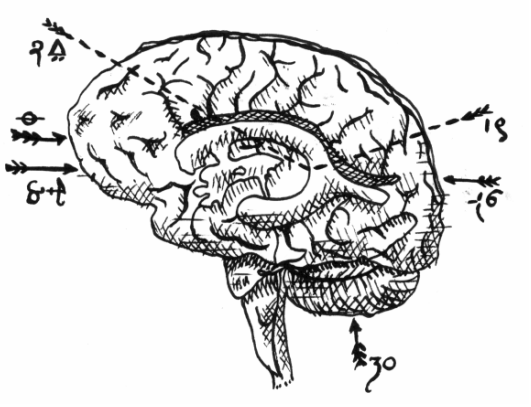

पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
तपःस्वाध्यायनि रत त पस्वीवाग्विथां वरम नव अस्मिन साम्प्रतं
लॉके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस

काभृते कुठारवते पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु
दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को
गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात
स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की
देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना
चाहिये।
तपःमाय अधिकारों के
मामले में जन्
लॉके गुणवान कश
च वीर्यवान धर्मज्ञश
च कृत्तज्ञश च
सत्यवाक्यॊ थृढव्रतः
चारित्रेण च कॊ
युक्तः सर्वभूतेषु कॊ
हितः विथ्वान कः कः
समर्दश च कश
चैकप्रियथर्शनः
आत्मवान कॊ
जितक्रॊधॊ मतिमान
कॊ ऽनसूयक कस्य
बिभ्यति थेवाश च
जात रॊषस्य

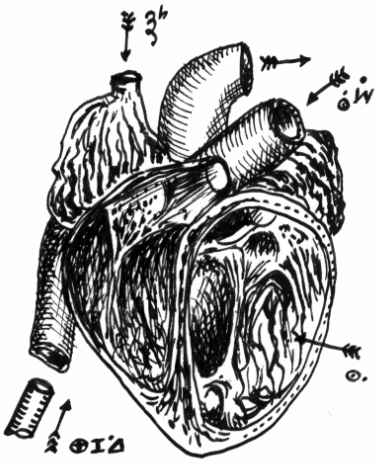

संयुगे एतथ इच्छाम्य अहं
तपःस्वाध्यायनि रत ंतपस्वी
वाग्विथां वरम नव अस्मिन साम्प्रतं
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः
आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
ीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और
समानता प्राप्त है। उन्हें बु
रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ

कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में
जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और
अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव
करना चाहिये।

पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
प्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों
के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उन्हें
बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के
भाव से बर्ताव करना चाहिये।
तपःस्वाध्यायनि रतं
तपस्वी वाग्विथां वरम नव
अ
रक्तकराय रक्तताल्
वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम
श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ
श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत
चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण
लक्षिताय सर्वाभ
रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ
माङ्गल्याय सर्वकार
णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय
इक्षुचापधराय कम्बुधराय
विधूतारिस मूहकाय
मातुलुङ्गध राय चूतकलि

श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते

पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
माय अधिकारों के मामले में जन् मजात
लॉके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

तपःस्वाध्यायनि रत त पस्वीवाग्विथां वरम नव अस्मिन साम्प्रतं
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
ीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और
समानता प्राप्त है। उन्हें बु

रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय

विनायकरतिप्र यिाय
महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी
मनुष्यों को गौरव
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय
अधिकारों के मामले में
जन् मजात स्वतन्त्रता और
समानता प्राप्त है। उन्हें
बुद्धि और अन्तरात्मा की
देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव से बर्ताव
करना चाहिये।
माय अधिकारों के मामले
में जन् मजात
लॉके गुणवान कश च
वीर्यवान धर्मज्ञश च

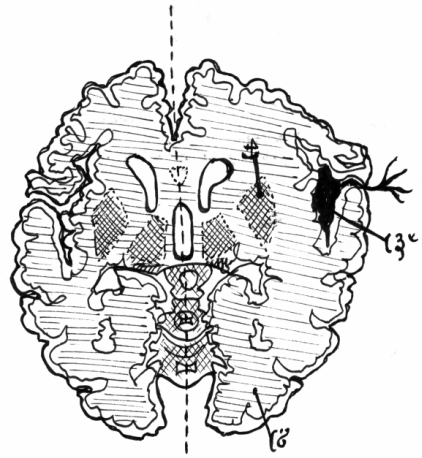

कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॉ थृढव्रतः चारित्रेण च कॉ युक्तः सर्वभूतेषु
कॉ हितः विथ्वान कः कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः
आत्मवान कॉ जितक्रॉधॉ मतिमान कॉ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति
थेवाश च जात रॉषस्य संयुगे एतथ इच्छाम्य अहं

ातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते पुष्करस्थस्वर्णघटी
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
प्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों
के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उन्हें
बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के
भाव से बर्ताव करना चाहिये।
तपःस्वाध्यायनि रत त पस्वीवाग्विथां

वरम सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय शार्ङ्गिणे
बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय
तपःस्वाध्यायनि रत त प स वीवाग्विथांवरमनवअ

रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है

क्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और
समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और

धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॉ थृढव्रतः चारित्रेण च कॉ युक्तः
सर्वभूतेषु कॉ हितः विथ्वान कः कः समर्दश च कश
चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॉ जितक्रॉधॉ मतिमान कॉ ऽनसूयक
कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॉषस्य संयुगे एतथ इच्छाम्य अहं

क्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और
समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और
परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले
लॉके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॉ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॉ युक्तः सर्वभूतेषु कॉ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॉ जितक्रॉधॉ
मतिमान कॉ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॉषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

रस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले

लॉके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॉ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॉ युक्तः सर्वभूतेषु कॉ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॉ जितक्रॉधॉ

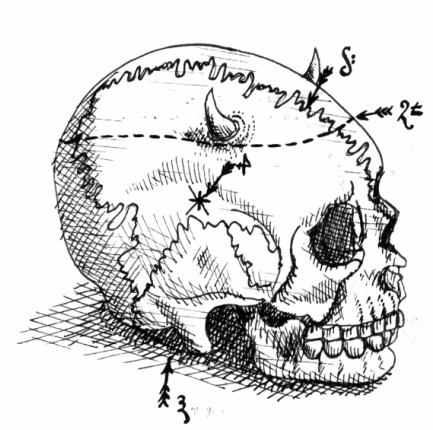

मतिमान कॉ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॉषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

त्रेण च कॉ युक्तः सर्वभूतेषु कॉ हितः विथ्वान कः कः समर्दश च
कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॉ जितक्रॉधॉ मतिमान कॉ ऽनसूयक
कस्य बिभ्यति थेवाश च जात

तमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता
प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्त

लॉके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॉ
प्राप्त बुद्धि और अन्त है। उन्हें
भा समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय

शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्ष
काय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय

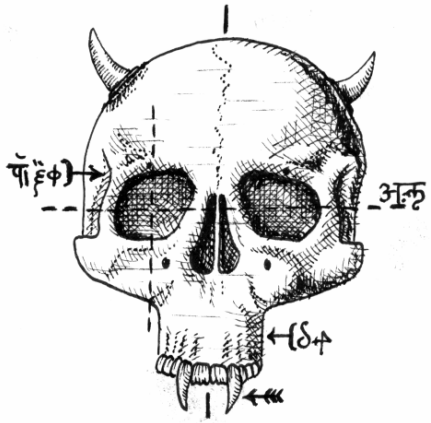

सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले
में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उच सत्यवाक्यॉ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॉ युक्तः सर्वभूतेषु कॉ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॉ जितक्रॉधॉ
मतिमान कॉ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॉषस्य संयुगे
एतथ इात्मा की देन है
क्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और
समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और
परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
लॉके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॉ
धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॉ

धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः
सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश
चैकप्रियथर्शनः आत्मवान क
यतमाय अधिकारों के मामले में
जन् मजात स्वतन्त्रता और
समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और
अन्तरात्मा की देन है और परस्पर
उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव
करना चाहिये।

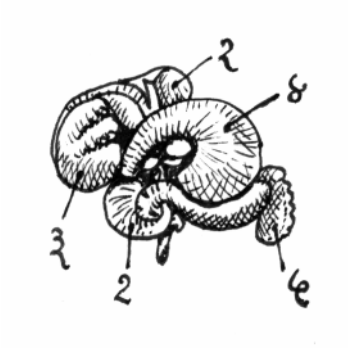

सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चै

चारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
तमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता
प्राप्त है। उन्हें बुद्धि

और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से
बर्ताव करना चाहिये।
तपःस्वाध्यायनि रत त पस्वीवाग्विशुद्धिमन साम्प्रतं
लॊके गुणवान कश च

वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ थृढव्रतः चारित्रेण च
कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः कः समर्दश च कश

चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ मतिमान कॊ ऽनसूयक
कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे एतथ इच्छाम्य अहं

माय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता
प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चै

माय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता
प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्त

: समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ मतिमान
कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे एतथ

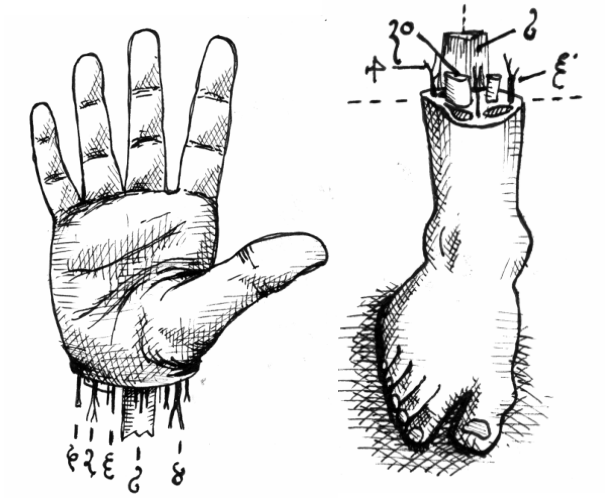

इच्छाम्य अहं

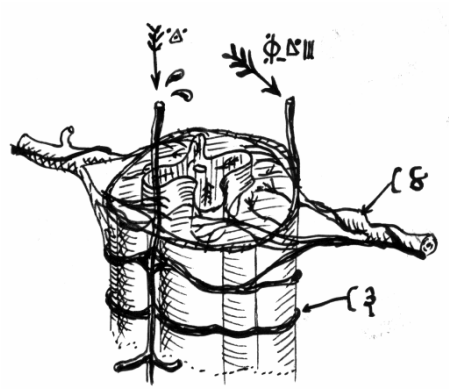

तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय

कम्बुधराय विधूतारिस मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते
कुठारवते पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव

औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ

हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं
सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में
जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और
अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव
करना चाहिये।
अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव से बर्ताव

अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव
करना चाहिये।
अन्तरात्मा की देन
है और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव

सत्यवाक्यॊ थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः
विथ्वान कः कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ
जितक्रॊधॊ मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात
रॊषस्य संयुगे एतथ इच्छाम्य अहं

माय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता
प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।

सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चै

माय अधिकारों के
मामले में जन् मजात
स्वतन्त्रता और समानता
प्राप्त है। उन्हें बुद्धि
और अन्त

: समर्दश च कश
चैकप्रियथर्शनः आत्मवान
कॊ जितक्रॊधॊ मतिमान
कॊ ऽनसूयक कस्य
बिभ्यति थेवाश च जात
रॊषस्य संयुगे एतथ
इच्छाम्य अहं

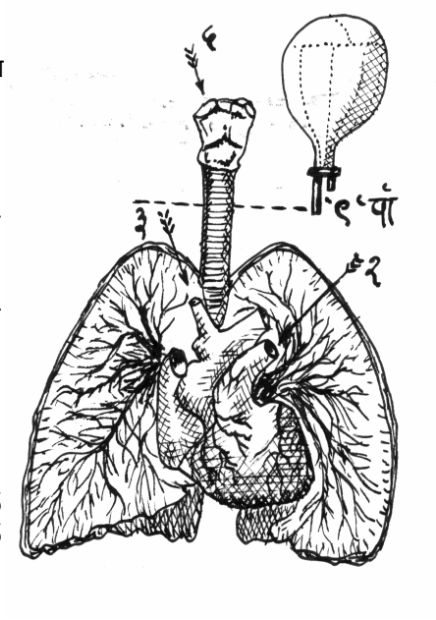

तकराय रक्तताल्
वोष्ठपल्लवाय श्वेताय
नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ
श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत
चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण
लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा समविताय सर्वमङ्गळ
माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा
धराय इक्षुचापधराय

कम्बुधराय विधूतारिस मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते
कुठारवते पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभि
तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे

बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय
:स्वाध्यायनि रत त पस्वीनाग्विथांवरमनवअ साम्प्रत लॊके
गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमा

पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य

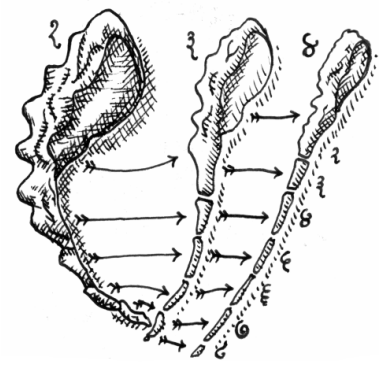

रत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
प्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों
के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उन्हें

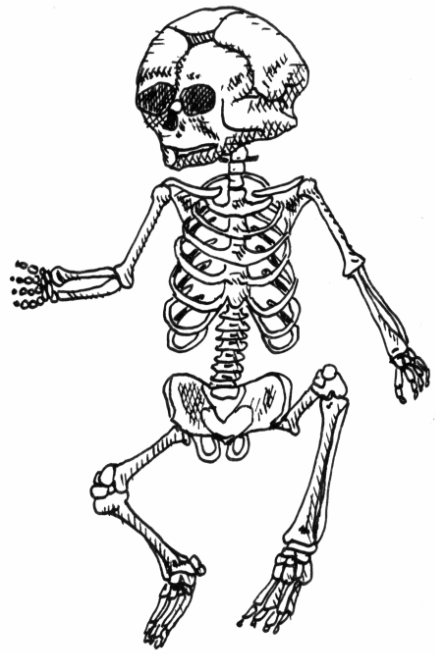

बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के
भाव से बर्ताव करना चाहिये।

तपःस्वाध्यायनि रत त प स वीवाग्विथांवरमनवअ
रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस

मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म

ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों
रत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
प्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों
के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उन्हें
बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के
भाव से बर्ताव करना चाहिये।

तपःस्वाध्यायनि रत त प स वीवाग्विथांवरमनवअ
रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय

ीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और
समानता प्राप्त है। उन्हें बु

रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ

थृढव्रतः चारित्रेण च
कॊ युक्तः सर्वभूतेषु
कॊ हितः विथ्वान
कः कः समर्दश च
कश चैकप्रियथर्शनः
आत्मवान कॊ
जितक्रॊधॊ मतिमान
कॊ ऽनसूयक कस्य
बिभ्यति थेवाश च
जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

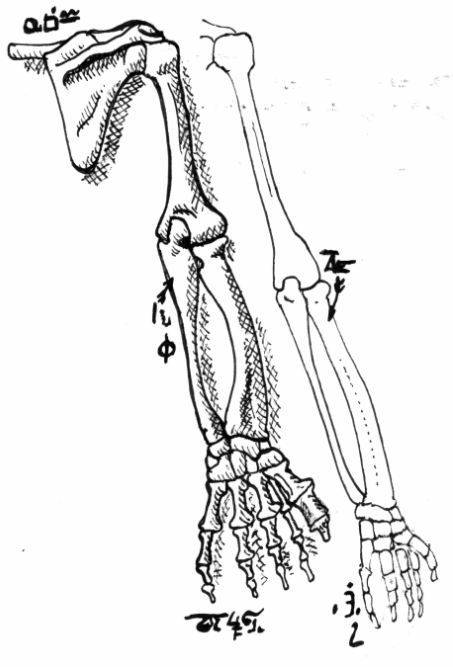

ातुलुङ्गध राय
चूतकलि काभृते
कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय
भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिय
महालक्ष्म ीप्रियतमाय
सभी मनुष्यों को
गौरव
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
तपःस्वाध्यायनि रत त पस्वीवाग्विथां

वरम सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय शार्ङ्गिणे
बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय
ीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय
ःस्वाध्यायनि रत त पस्वीवाग्विथां साम्प्रत ंलॊके
गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृतज्ञश च सत्यवाक्यॊ

थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं
तपःस्वाध्यायनि रत त पस्वीवाग्विथां साम्प्रतं
कः समर्दश च कश

चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिय महालक्ष्म ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमा

चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः कः
समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ मतिमान
कॊ ऽन

यॊ थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान
कः कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिय महालक्ष्म ी
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिय महालक्ष्म ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमा

थर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य
बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे एतथ

सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य
रत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिय महालक्ष्म ी

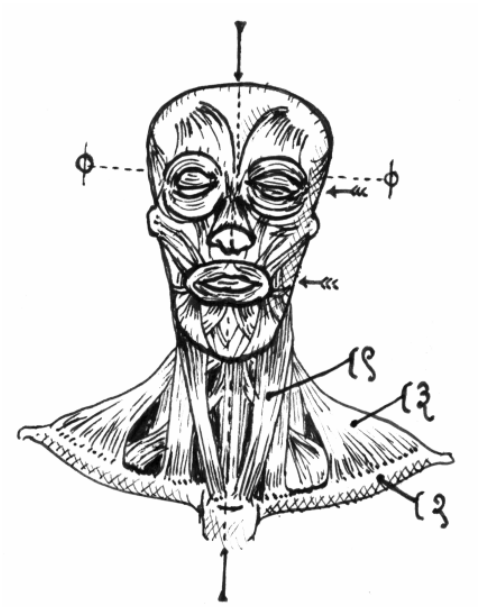

प्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।

तपःस्वाध्यायनि रत त प स वीवाग्विथांवरमनवअ
रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ

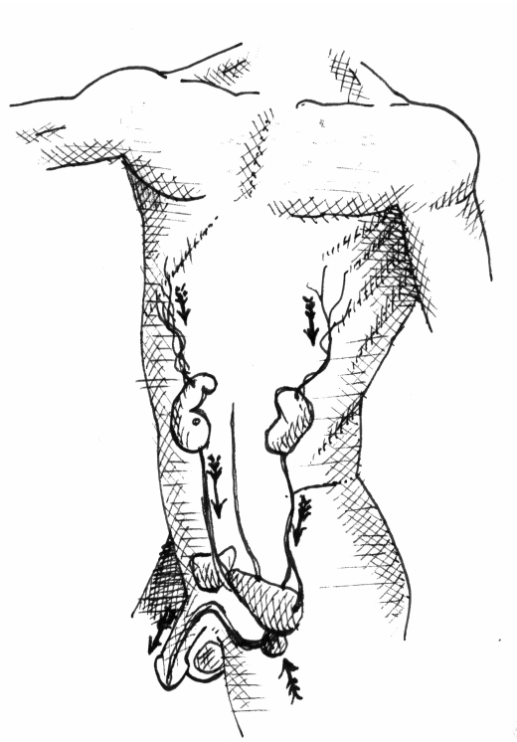

पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिय महालक्ष्म ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमा

कः कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयु
रतिप्र यिय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव

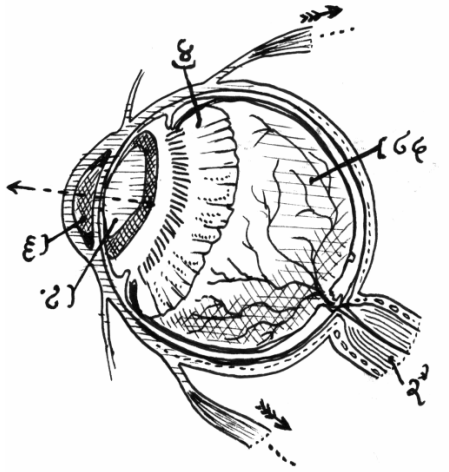

औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा

वाक्यो थृढव्रतः चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः विथ्वान
कः कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान को जितक्रोधो
मतिमान को ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रोषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

मानता प्राप्त है। उन्हें बु
रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस

मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के
भाव से बर्ताव करना
चाहिये।
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण
लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय
सर्वशोभा लोके गुणवान कश
च वीर्यवान धर्मज्ञश च
कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यो
थृढव्रतः चारित्रेण च को
युक्तः सर्वभूतेषु को हितः
विथ्वान कः कः समर्दश च
कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान
को जितक्रोधो मतिमान को
ऽनसूयक कस्य बिभ्यति
थेवाश च जात रोषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

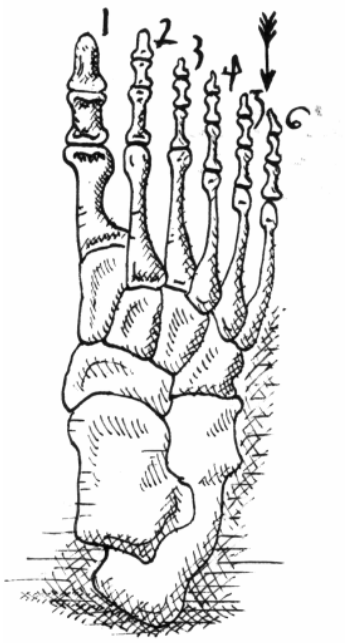

ातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते
कुठारवते पुष्करस्थस्वर्णघटी
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु
दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय
महालक्ष्म ी

रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा

समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी

नुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन्
मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और
अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव
करना चाहिये।
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
लोके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यो
थृढव्रतः चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान को जितक्रोधो
मतिमान को ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रोषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

ातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते पुष्करस्थस्वर्णघटी
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
प्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों
रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते

पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है

और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।

रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी

रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव

औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
माय अधिकारों के मामले में जन् मजात
लोके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यो
थृढव्रतः चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान को जितक्रोधो
मतिमान को ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रोषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

लोके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यो

कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों

ों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वा

धिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त
है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव
ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्
यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार ण

ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्
यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णऔरमहालक्ष्मीप्रियतमाय
अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त
है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
माय अधिकारों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः
ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्
यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार ण

औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
माय अधिकारों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों

समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ मतिमान
कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे एतथ
इच्छाम्य अहं

थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों

ों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वा

धिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त
है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव

ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्
यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार ण

ों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वा

धिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त
है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव
ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्

ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्
यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णऔरमहालक्ष्मीप्रियतमाय
अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त
है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
माय अधिकारों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः
ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्
यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार ण
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात

स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
माय अधिकारों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों

समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ मतिमान
कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे एतथ
इच्छाम्य अहं

थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों

ों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वा

धिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त
है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव

ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्
यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार ण

ों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वा

धिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त
है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव
ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्

ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्
यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णरक्तकराय रक्तताल्
वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल् यविभूषणाय
ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय वसम्पूर्णाय
सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा समविताय
सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय शार्ङ्गिणे
बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस मूहकाय
मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते

पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।

रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी

रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव

औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
माय अधिकारों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं

थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ

पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ी
भी मनुष्यों को गौरव औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों

ों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वा

धिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त
है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है और परस्पर उन्हें
भाईचारे के भाव
ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्
यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार ण

ाय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल्
यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय
वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णरक्तकराय रक्तताल्
वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ श्वेतमाल् यविभूषणाय
ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय सर्वावय वसम्पूर्णाय
सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा समविताय
सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय शार्ङ्गिणे
बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस मूहकाय
मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते

पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव
औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है

और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।

रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी

रक्तकराय रक्तताल् वोष्ठपल्लवाय श्वेताय नम श्वेताम् बरधराय ॐ
श्वेतमाल् यविभूषणाय ॐ श्वेतातप त्ररुचिराय श्वेत चामरवीजिताय
सर्वावय वसम्पूर्णाय सर्वलक्षण लक्षिताय सर्वाभ रणभूषाढ्याय सर्वशोभा
समविताय सर्वमङ्गळ माङ्गल्याय सर्वकार णकारणाय सर्वदैककराय
शार्ङ्गिणे बीजापूरगदा धराय इक्षुचापधराय कम्बुधराय विधूतारिस
मूहकाय मातुलुङ्गध राय चूतकलि काभृते कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकाय भारतीसु दरीनाथाय
विनायकरतिप्र यिाय महालक्ष्म ीप्रियतमाय सभी मनुष्यों को गौरव

औरमहालक्ष्मीप्रियतमाय अधिकारों के मामले में जन् मजात स्वतन्त्रता
और समानता प्राप्त है। उन्हें बुद्धि और अन्तरात्मा की देन है
और परस्पर उन्हें भाईचारे के भाव से बर्ताव करना चाहिये।
माय अधिकारों के मामले में जन् मजात
लॊके गुणवान कश च वीर्यवान धर्मज्ञश च कृत्तज्ञश च सत्यवाक्यॊ
थृढव्रतः चारित्रेण च कॊ युक्तः सर्वभूतेषु कॊ हितः विथ्वान कः
कः समर्दश च कश चैकप्रियथर्शनः आत्मवान कॊ जितक्रॊधॊ
मतिमान कॊ ऽनसूयक कस्य बिभ्यति थेवाश च जात रॊषस्य संयुगे
एतथ इच्छाम्य अहं